टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम
पीस ऑफ माइन्ड, डी एन एन चैनल 24 घन्टे आप क शहर में
जागरण टीवी : सुबह 4.00 से 6.00 बजे
राष्ट्रीय सहारा समय : सुबह 6.55-7 बजे,दोप.2.50-3 बजे
आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे
जी-24 (छत्तीसगढ़): सुबह 5.30 से 6.00 बजे
जीटीवी (तमिल) : दोप. 2.30 बजे से 6 बजे (सोम. से शुक्र)
दीसा चैनल : सुबह 6.10 से 6.40
ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)
उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान,महाराष्ट्र
ईटीवी – उड़ीसा, कर्नाटक –सुबह 5.30–6.00 (प्रतिदिन)
BSNL IP TV (Divine Box)
Om Shanti Channel (24 Hours)
EASY Box (BoL) (प्रतिदिन)
सुबह 7 बजे से रात्रि 11 बजे तक
मो टीवी – तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक
मो ग्युजिक – तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक
भक्ति – तेलगु सुबह 10.00
विदेश –आस्था इंटरनेशनल में – यूके – 8.40 जीएमटी
यूएसए व कनाडा 8.40 ईबे, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30
आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे ग्युजिक चैनल
डिवाइन बाक्स के लिए सम्पर्क करें – 9414152296

ओम शान्ति मीडिया का नवीन संकलन सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ -कथा सरिता, हैपिनेस इन्डेक्स, गीता का आध्यात्मिक रहस्य उपलब्ध है ।

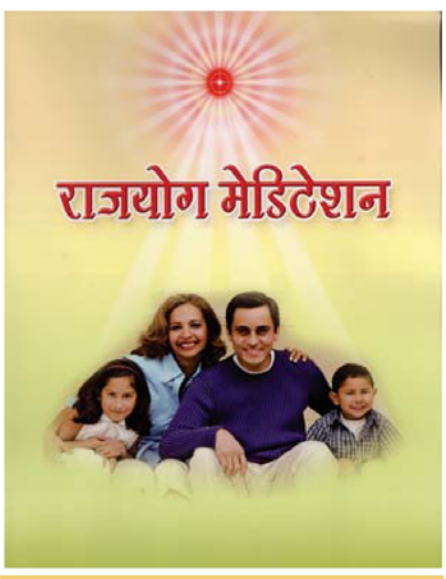

सूचना

आप सभी भाई-बहनों की मांग पर राजयोग प्रवचन माला की पुस्तक 'राजयोग मेडिटेशन', गीता सार, हैप्पीनेस इंडेक्स, नवीन संस्करण के साथ 'ओम शांति मीडिया' ऑफिस में उपलब्ध है। आप इसे ओम शांति मीडिया, के शांतिवन कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

दादी दूरदर्शी थी - ब्र.कु.करूणा, माउंट आबू

मल्टी मीडिया के चीफ ब्र.कु.करूणा

ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् दादी जी के साथ विश्व सेवा करने का सौभाग्य मुझे मिला।

दादी जी ने मुझे अपने विश्वसनीय साथी के रूप में ईश्वरीय सेवार्थ सहयोगी बनाया। दादी जी को मेरे ऊपर इतना विश्वास था कि नित नई तकनीक प्रयोग करने के लिए सदा प्रोत्साहित करती और सदा उसके लिए तैयार रहती थी। दादी जी के आशीर्वाद उमंग-उत्साह आबू मुख्यालय से 1969 से ही विश्व के सभी सेवाकेंद्रों के साथ जुड़ गया था। विशेष तौर पर अव्यक्त बापदादा की मुरली कुछ ही घंटों में सारे विश्व में पहुंच जाती थी। उस समय यज्ञ में केवल एकमात्र फोन था। आज हजारों फोन हैं। जिससे सेवाओं की वृद्धि करने में सहायता मिली। दादी जी का मुझ पर विश्वास रखने के कारण ही आज यह सफलता मिली है। दादी जी के होते हुए सारे विश्व के ब्राह्मण परिवार एक ही मुरली हर सेंटर पर पढ़े, सुने, सोचे - करें यह भी दादीजी के सहयोग से संभव हुआ।

कई सालों तक ब्रह्मा बाबा द्वारा शुरु किए हुए आवाज ऑडियो सर्विस बड़े-बड़े टेप मशीन द्वारा, कैसेट, सी.डी. एवं मेमोरी कार्ड द्वारा शुरु हुई। सारे विश्व तक बाबा के ज्ञान का प्रसार शुरु हुआ। आज सारे विश्व के हजारों दिव्यगीत दादी के आशीर्वाद से बना। दादी स्वयं उन गीतों को गुन-गुनाती थी। दादीजी के प्रेरणा से फिल्म सेवा भी उमंग-उत्साह से आरंभ किया गया। हजारों स्लाईड प्रोजेक्ट्स, सपलीमेंट्री फिल्म, प्रोजेक्ट, विडियो द्वारा ईश्वरीय संदेश पहुंचाने का भी दादीजी का मार्गदर्शन, सहयोग व प्रेरणा सदा रही।

दादी सदा कहती थी मीडिया वाले शिवबाबा के राईट हैंड हैं। इन्हीं द्वारा सारे विश्व में ईश्वरीय संदेश पहुंचेगा। मीडिया वाले जब भी व्यक्तिगत रूप से या कॉन्फ्रेंस में आते थे तो दादी सबसे मिलती थी और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उमंग-उत्साह दिलाती थी। आज भी वे यहां आते हैं अभी जो भी यहां आते हैं वह उन्हें याद करना नहीं भूलते। दादी जी का हंसमुख चेहरा व निश्छल स्नेह भरा व्यवहार आज भी वे भूला नहीं पाये हैं। कईयों को तो उनकी याद आते ही आँखें नम हो जाती हैं। दादी जी का उमंग सदा रहता था कि बाबा का संदेश सारे विश्व में पहुंचे। उसके लिए उन्होंने विश्व भर से 10,000 मीडिया वालों को बुलाने का संकल्प व्यक्त किया और उनका प्रबंध यहां करेंगे ऐसा वह सदा उत्साह दिखाती थी। उस समय भारत में सिर्फ दूरदर्शन चैनल था जिसमें धर्म-आध्यात्मिकता के लिए समय नहीं देते थे। पहले-पहले 'जी टी.वी.' की सेवा शुरू हुई। उस समय बाबा का संदेश देने के लिए समय दिया गया । यह सुनकर दादीजी बहुत खुश हुई। और कहा कि शीलू बहन को ले जाओ। अर्थात् टी.वी. द्वारा ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ दादीजी के होते ही शुरू हो गई थी। जो आज सारे विश्व में पहुंच गई है। उनके संकल्प के बदौलत ही आज बाबा का 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध हुआ।

साकार बाबा को भी रेडिया द्वारा सेवा करने की प्रेरणा देते थे। जिसको दादी ने भी उमंग-उत्साह देती थी जो आज 24 घंटे सेवा हो रही है। दादी जी हमेशा दूसरों पर पूर्ण विश्वास के साथ कार्य सौपती थी। दादी और कार्य होने पर उनकी प्रशंसा करती थी। दादी जी की दूरदर्शिता गजब की थी। जो देखते ही उन्हें परख लेती थी और उस अनुरूप कार्य सौंपती थी। दादीजी को सेवा के प्रति नये संकल्प आता था तो पहले वह मधुबन में सेवा साथियों को संकल्प सुनाती थी और उनसे राय लेकर ही प्रोग्राम का प्रारूप तैयार करती थी। सेवा के विस्तार को देख दादी जी ने सर्व सेवा साथियों के बीच यह संकल्प रखा कि इन सेवाओं से सभी लोगों को अवगत कराने के लिए सेवा समाचार हरेक के पास पहुंचे उसके लिए एक अपना 'न्यूज पेपर' होना चाहिए। जो कि हर सप्ताह में सभी को मिल सके। तब सबकी राय से पंद्रह दिन में एक बार 'ओम शांति मीडिया' निकालने का निर्णय लिया गया। जो आज बाबा का संदेश विश्व के हर कोने में पहुंच रहा है। यह सेवा दादी जी के होते ही वर्ष 1999 में शुरू हो गई थी। दादी जी के रहते ही इंटरनेट, टी.वी. द्वारा सेवाओं का आरंभ हो गया था जिसे आज इसके माध्यम से विश्व में हम कहीं भी देख व सुन सकते हैं। यह दादीजी की दूरदर्शिता का ही परिणाम है। दादीजी में सदा यह उमंग रहता था कि बाबा का संदेश हर एक व्यक्ति को मिले इससे कोई भी वांचित न रह जाये। इसके लिए वे सदा प्रयासरत रहती थी।

कोई भी नई-नई सेवा का आरंभ करने के लिए सेवा साथियों को विचार देकर फिर सेवा करती थी।दादी के मिलने के लिए सदा दरवाजा खुला रहता था। जिस कारण कोई भी सेवा किसी भी कारण रूकती नहीं थी।भूलें सबसे होती है परंतु दादीजी सुनती भी थी, समझाती थी और अपने दिल में नहीं रखती थी। 'क्षमा करो और भूल जाओ' इसका वह प्रत्यक्ष उदाहरण थी।

दादीजी क्षमा का मास्टर सागर थीं - ब्र.कु.भुपाल

शांतिवन के प्रबंधक ब्र.कु.भुपाल

मुझे आदरणीय दादीजी के अंग-संग रहने का और उनकी पालना का महान भाग्य प्राप्त हुआ और यज्ञ सेवा करने की सर्व प्रकार की शिक्षा भी मिली। मुझे दादी जी के साथ लगभग 35 वर्षों तक साथ में रहने में सेवा करने का सुअवसर मिला। उस समय दादीजी को कुमारका दादी के नाम से पुकारते थे। दादी जी हमें .छोटे भाई की तरह रखती थी। यदि कभी कोई भूल जो जाती थी तो भविष्य के लिए सावधान करती थीं और कभी भी किसी की भूल को दिल में नहीं रखती थी। इस बारे में दादी जी बाबा समान क्षमा का मास्टर सागर थीं। कोई भी कार्य होता तो खुद पहला कदम रखती, और औरों को आगे बढ़ाने के निमित्त बनती। वह हर यज्ञ वत्स के स्वास्थ्य का ध्यान रखती थीं। बाबा की सीजन आने से पहले हर विभाग को आवश्यकता की सभी चीजों का पूर्ण स्टॉक रखने को कहती। दादीजी की विल पावर में दृढ़ता बहुत थी, कोई भी कार्य पहले वह स्वयं करती और सभी को कहती कि बाप-दादा साथी है। डबल इंजन है। तो फिर क्यों फिकर करें, करनकरावनहार सर्व शक्तिवान बाप-दादा साथ है। कई बार कार्य में ऊपर-नीचे हो जाता तो बहुत ही लाड़-प्यार से शिक्षा देती । दादीजी के पास किसी को कोई काम हो उस समय रात हो या दिन वह बिना रोके-टोके दादी जी से मिलने चला जाता था। सदा याद दिलाती कि सच्चाई, सफाई, इमानदार, आज्ञाकारी, एकनामी, एकोनामी, एक मत वाले बनो। सभी की बात सुन उसका समाधान तुरंत करती थीं।

एक दिन दादीजी की तबियत खराब हो गई थी, वो भी इतना तक की दादीजी की गले की भोजन की नली तक सुख गई थी। यहां तक की दादी जी को गाय के दुध में पानी मिलाकर पतला कर बुंद-बुंद कर पिलाते थे। सभी प्रकार के इलाज की कोशिश की पर कामयाबी नहीं मिली। आखिर दादीजी को ऑपरेशन के लिए मुम्बई जाना पड़ा। भोजन की कमी के कारण दादीजी बहुत दुबली हो गई थी।

एक आध्यात्मिक शैक्षणिक.....

पृष्ठ 6 का शेष

आध्यात्मिक शिक्षा में भी मन का नाता परमपिता परमात्मा शिव से जोड़ने के लिए कहा जाता है परन्तु उसका उद्देश्य लोगों को शैव सम्प्रदाय में शामिल करना नहीं होता, न ही उसके पीछे वैष्णव या शाक्त सम्प्रदायों को घटिया बनाने की भावना होती है। दूसरे शब्दों में, इस शिक्षा का अभिप्राय भी किसी वर्तमान सम्प्रदाय की महिमा को बढ़ाना या कोई नया सम्प्रदाय स्थापन करना नहीं होता बल्कि लोगों को सत्य का मार्ग दर्शाना होता है। आध्यात्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक विद्यालय की एक और विशेषता यह है कि वह किसी एक धर्म की नहीं बल्कि सभी धर्मों का इतिहास में जो स्थान है, उस पर प्रकाश डालता है। वह सत्य और हितकर नियमों के सार्वभौम रूप को समूचे मानवमात्र के समाने रखते हैं। उसमें एक अशरीरी परमपिता परमात्मा की ही परम महिमा होती है, वे किसी भी मनुष्य को परमात्मा या परमात्मा के बराबर नहीं मानते। यदि सत्यता आज की वैज्ञानिक, दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मान्यताओं से भिन्न हो तो भी वह सत्यता को सबके सामने रखने के कर्त्तव्य से विमुख नहीं होते। वे हर धर्म और हर शिक्षा-क्षेत्र की गलत एवं अंधविश्वास पर आधारित मान्यताओं को दूर कर उन्हें पवित्रता और सच्चाई के मार्ग का संकेत देते हैं। इस प्रकार वह नये तथ्य सभी के सामने रखते हैं, नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और जितने भी ज्ञान-विज्ञान अस्तित्व में हैं, उन सभी पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं क्योंकि उनका अभिप्राय तो सत्यता और शुद्ध एवं सम्पूर्ण सत्यता को दर्शाना है। इस प्रकार उनका अध्ययन क्षेत्र केवल आध्यात्मिक नहीं होता यद्यपि आध्यात्मिक लक्ष्य सदा उनके सामने रहता है। वे ज्ञान के हरेक क्षेत्र का, जहां तक कि उसका आध्यात्मिक ज्ञान से सम्बन्ध है, चर्चा करते हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान एक विस्तृत विषय है और इससे सभी ज्ञानों-विज्ञानों का ताना-बाना आध्यात्म से जुड़ा है और इसके निष्कर्ष सभी ज्ञानों तथा विज्ञानों के लिए रूचिकर तथा महत्वपूर्ण है।